शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

राजस्थान में पशु–पक्षियों का चित्रांकन

प्राप्तिः 22.08.2021
स्वीकृतः 12.09.2021

डॉ० विभूति शर्मा
सहायक प्रोफेसर, एम0 एच0 पी0 जी0 कॉलेज
मुरादाबाद
ईमेलः *svibhuti892@gmail.com*

सारांश

लेख में राजस्थान की भिन्न शैलियों के पशु–पक्षियों का सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है। गायों–बछड़ों का वात्सल्य, घोड़ों, शेर, चीता, तोता, बन्दर, साँप, हाथी, चीतों, शेषनाग, कालिया मर्दन, गरूड़, मगरमच्छ आदि के चित्रण में रेखाओं व रंग का जादू बिखेर कर मंत्र–मुग्ध कर दिया है।

इसी प्रकार पक्षियों को एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है राजस्थानी विहगों जैसे तोता, मोर, मैना, कोयल, हंस, बगुला, चकोर, चातक, पपीहा, बाज, मुर्गा, खंजन, कुरजा आदि चिड़ियों का प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है। सात स्वरों के चित्र में दिव्य रूपों को भी पक्षियों पर सवारी रूप में बैठे हुये चित्रांकित किया है। राजस्थान की शैलियों का विकास निरन्तर होता रहा है।

सौंदर्य के खजाने की खान है राजस्थान, जितना भी खोज करें चारों ओर सौंदर्य ही बिखरा हुआ है यहाँ पर अनेकों चित्र चित्राँकित किये गये हैं जिनमें चित्रकारों ने पशु-पक्षियों के सौंदर्य को चित्रों में चित्रांकन किया है और उनके सौंदर्य को भरपूर निखारा है अपनी-अपनी शैलियों के प्रभाव के साथ रेखांकित किया है।

राजस्थानी शैलियों में से एक शैली है नाथद्वारा शैली। नाथद्वारा शैली प्रमुखत: से गायों का अभिभूत करने वाला चित्रण किया है। श्वेत-श्याम गौ वत्स की अठखेलियाँ,दुधारू गायों का बछड़ों के प्रति वात्सल्य और ग्वालों का सीधे स्तनों से दुग्धपान करना गायों का मातृत्व स्नेह दर्शाता है। गायों का अपने बछड़ों तथा गोप बालकों के प्रति सम्मान व क्षम्यपूर्ण भावना एक अलौकिक विमुग्धा दर्शाता है। नाथद्वारा की पिछवाइयों में यह सब कुछ देखने को मिलता है अन्यत्र कहीं के भी, कैसे भी चित्रों में इस स्थिति के दृश्यों का अभाव है।[1]

चित्रों में गायें ह्रष्ट-पुष्ट, दुधारू, अनुपात में प्रामाणिक और शरीर व स्वाभाव से वात्सल्य रस की निष्पत्ति करती हुई है। चित्रकार ने रेखा व रंग का जादू बिखेर कर मंत्र-मुग्ध किया है। गाय सम्पूर्ण चित्र को अपने आप में समेटे हुये है। रेखा गतिमय और सजीव है, जिनके माध्यम से भावबोध ा हो रहा है। केन्द्र संयोजित चित्र है। रंगों का संयोजन भी भली-भाँति किया गया है जो चित्र सूत्र के सिद्वान्तों के अनुरूप है।

सम्पूर्ण चित्र-तल में कलाकार ने मात्र एक आकृति कामधेनु को ही प्रकाशित किया है जो मुख्य रूप से केन्द्र में उभार कर दर्शाया गया है। आकृतियाँ इस प्रकार से संयोजित की गई हैं कि

दर्शक का ध्यान सर्वप्रथम केन्द्र में बनी कामधेनु पर जाता है फिर भी नेत्र पुन: कामधेनु की ओर अग्रसर होने को आतुर रहते हैं। कृति के मध्य में कामधेनु का लाल स्थिर आयत (खण्ड) में दर्शाया गया है। पंख,पूँछ और मुख-मण्डल से गति का हल्का सा आभास प्रतीत होता है। मुखमण्डल की गतिमान प्रवाही रेखाएँ कामधेनु के वैचारिक प्रवाह को दर्शाती हैं।

जयपुर शैली में एक चित्र है जिसमें कृष्ण के चारों ओर गायें गोपियों तथा ग्वालबाल है,सब गोवर्द्धन पर्वत के नीचे खड़े हैं। चित्र में यमुना का किनारा वास्तविक चित्रित किया गया है। चित्र की आकृतियों में गति लय और भाव हैं।

जयपुर के मंदिरों में चित्रित/चित्ररंजित (भित्ति) चित्रों के अन्य उदाहरण यहाँ ष्गोविन्द देवष्जी के मंदिर में दिग्दर्शित होता है। इस मंदिर के गर्भगृह की बाह्य दीवार पर दोनों ओर गायों का चित्रांकन अत्यधिक सौंदर्यपूर्ण और मनोहारी हैं।

संयोजन की दष्ष्टि से प्रकृति के सौन्दर्य को बहुत ही सहजता से चित्रित किया गया है। चित्र का विषय कुछ भी हो लेकिन सभी में अत्यन्त सौन्दर्य का सष्जन किया गया है। चित्रों के माध्यम से प्रतीत होता है कि चित्रकार की दष्ष्टि भक्ति में इतनी रची बसी थी कि प्रकृति के आध्यत्मिक सौंदर्य का आनन्द ही लेता। आलेखन तथा तूलिका की गतिशीलता को दष्ष्टिपथ पर रखकर देखें स्वर्ग को भी विमुग्ध कर देने वाली झाँकियाँ अंकित की गई हैं जो साक्षात् कामधेनु स्वरूपा है।

गलता कुंड आगरा रोड पर बनी जनाना घाट की छतरी पर बने भित्ति- चित्र बोहरा जी का शिवमंदिर आगरा रोड में गौ-दोहन का चित्र अलंकृत गाय सीमारेखा के उत्तम उदाहरण है। कृष्ण गौ-दोहन के चित्र में कामधेनु के वस्त्रों पर सुन्दर बेल बूटे चित्रित किये गये,चित्र के चारों ओर ज्यामीतिक विन्यास में पुष्प चित्ररंजित किये गये जो त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करते है।

जयपुर के कई मन्दिर शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र सिद्ध हुये हैं–उदाहरण स्वरूप–श्री मदन मोहन जी के मंदिर में हाईस्कूल,राम-चाँदनी के मंदिर सिरह ड्योडी बाजार में संस्कृत कॉलेज आदि में विद्यालय चल रहे हैं। शिक्षा की उपादेयता में समर्थक इन मंदिरों के विभिन्न स्थानों पर चित्रकारों ने पशु,पक्षी,पुष्प,लता, पौराणिक दष्श्यांकन के साथ-साथ लोकगाथाओं का भी प्रदर्शन कर सामाजिक जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है।

नाथद्वारा शैली में सिंह पोल के अन्दर की दीवार पर दोनों ओर नीले व लाल वर्ण के गहनों से लक-दक सजे घोड़े आदमकद से बड़े बनाये जाते हैं। साथ ही उनकी लगाम पकड़े राजसी पोशाक में चरवाहे प्रतिवर्ष बनाये जाते है। इनका चित्रण बहुत ही उत्कृष्ट एवं सौंदर्य से भरपूर होता है।[2]

एक चित्र में अग्रभूमि में राजा दिलीप का रथ तो इस प्रकार प्रवाहित दर्शाया है कि अत्यधिक गतिमान है और उसका आभास घोड़े के पैरों की गति राजा दिलीप के उड़ते कपड़ों और घोड़ों की पूँछ से होता है।[3] कामधेनु की नेत्र दष्ष्टि और गतिमय रथ में एक विशिष्ट प्रकार का सामंजस्य है,जैसे कामधेनु को उसके आलावा कुछ दिखाई नहीं दे रहा। चित्र एकदम देखने से एक लंबीय प्रतीत हो रहा है।

भगवान कृष्ण को प्रतीकात्मक स्वरूप मे भी चित्रित किया गया है जिनका माध्यम पशु-पक्षियों को बनाया गया है। सम्पूर्ण चित्र पिछवाई में कृष्ण को अमूर्त का प्रतीक रूप में और गाय,बाँसुरी,मोरपंख,मोर भी चित्रित किये गये हैं। मन को सन्तुष्ट और शान्ति प्रदान करने के लिये

जंगली जानवर,शेर,चीता,तोता,मोर,बन्दर आदि विशिष्टता पूर्वक बनाये गये हैं कि प्रकृति में विचरित पक्षी, जीव-जन्तु सभी एकाग्र हो मुरली मनोहर की मुरली की धुन सुनते-सुनते भाव विभोर हो गये हों।

हाड़ौती कोटा शैली में बछड़े, साँप, हाथी, चीतों ,बंदरों को यूरोपीयन तकनीक से बनाया गया, हाशिये लाल हिंगूल, पीले व हरे रंग से चित्ररंजित किये गये है, इनमें सुनहरी रेखायें बनायी गयी हैं। मारवाड़ शैली में पशुओं में सिंह, हाथी व सर्प मार्मिक है। चित्रकारों को पीला रंग प्रिय था, उनके द्वारा स्वर्ण का भी भरपूर प्रयोग किया गया है।

ढुँढाड़ जयपुर शैली में सवाई प्रताप सिंह के काल में चित्रों में भावों को विभिन्न मुद्राओं में सुन्दरता से अभिव्यक्त किया गया। सभी चित्रों में बेलबूटेदार हाथियों का चित्रण किया गया है। एक चित्र में शिकारी हाथी पर तलवार लिये शेर पर हमला कर रहे हैं, हाथी ने सूंड में शेर को पकड़ रखा है और शेर ने आदमी को जकड़ रखा है, चित्र बहुत सजीव दिखाई देता है। सिसोदिया बाग में शेर तथा सुअर के शिकार का चित्र है इस चित्र में हाथी लाल रंग से चित्रित है सुअर महरून रंग से चित्रित है शेर और हिरन पीले रंग से बनाये गये हैं।[4]

शेर अम्बे माँ की सवारी है,दुष्टों के संहार व शक्ति का प्रतीक दर्शाया गया है, इसका चित्रण हिन्दू चित्रकारी के अन्तर्गत पशु सवारी की धार्मिक पुराण सम्बन्धी धारणा को स्पष्ट करता है।

एक चित्र में ऊँट का बहुत सुन्दर मनोहारी चित्र बनाया गया है ऊँट पर एक पुरूष आकृति बैठे हुये चित्रित है ऊँट आभूषणों सजाया हुआ चित्रित किया गया है, चलते हुये दर्षष्टिगोचर होता है।[5]

जयपुर शैली में जिर्राफ का चित्रण भी हुआ है, इनका खड़े होने का क्रम बड़े ही मनाकर्षक रीति से चित्रांकित है- इस चित्र में दो जिर्राफों का मुखमंडल एकचश्म चित्रित है और दूसरे का सवाचश्म मुखमंडल बड़ी सुन्दरता के साथ तूलिका से उकेरा है, अन्य एक और जिर्राफ का मुखमंडल दूसरी ओर है उसका का पार्श्व भाग ही दृष्टिगोचर हो रहा है।

प्रकृति चित्रण में चित्ररंजक/चित्रकार की सौंदर्यमयी कल्पना प्रियता,प्रकृति के संयोजन विधा में अपूर्व चित्रण क्षमता परिलक्षित होती है। ए.सी.(177) में घुमड़ते बादल सूर्य की रश्मियाँ अम्बर में हरिचाप (इंद्रधनुष) की गोलाई इसका अनुपम उदाहरण है और सबसे महत्वपूर्ण है कि सुरम्य सौरभ मौसम से प्रभावित पशु- पक्षियों का चित्रण- जैसे प्रकृति के राग में ही सुर आलाप लगा रहे हों। ए.जी.(404) जिस सतह पर पशु-पक्षी समूह (सामूहिक रूप में)की तरह चित्रित किये गये हैं ए.जी.(107-108) आदि में भित्ति चित्र (चहार दीवारी के अंदर) में गायों के सामूहिक रूप का बहुत ही मनरंजक चित्रांकन है।

गोपियों के संग कन्हाई का नष्त्य जो वष्ताकार रूप में उसमें गोपिकाओं की संख्या को गिनना सहज/सरल नहीं कहा जायेगा। चित्रित पष्ष्ठ के ऊपर अंबर में अनेक देवी-देवताओं के वाहनों का अगला सिरा विभिन्न पशु के मुखमंडलों से चित्रित किया गया है। जिन पर पताका फहरा रही है।

जयपुर में निजी प्रयासों के द्वारा भी चित्रकला के आधुनिक स्वरूप को दिग्दर्शित किया गया है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण बिड़ला मंदिर (लक्ष्मी नारायण का मंदिर) है जिसका निर्माण श्री ब्रजमोहन बिड़ला के द्वारा कराया गया है। इस मंदिर की भित्तिकाओं में संगमरमर पर शेषनाग,

कालिया मर्दन,गरूड़ आदि की आकृतियाँ उत्कीर्ण की गयी हैं जिनका सौंदर्य दर्शकों के मन को आकर्षित करता हैं, वे पलकें झपकना भूल जाते हैं, टकटकी लगाकर देखते रहते हैं। इस मंदिर का वैभव अनुपम है।

पुरोहित जी की हवेली गण गौरी बाजार,ब्रह्मपुरी मार्ग जयपुर 19 वी सदी में बने भित्ति चित्रों में अलंकरण का बहुत महत्व है, श्री गणेश और गंगा देवी के सरोवर के मगरमच्छ में भी अलंकरण बनाकर चित्रांकित किया गया है। आदर्श नगर शमशान घाट कुमार सिंह जी की छतरी 19 वीं सदी की भित्ति पर बना शेषनाग पर विष्णु जी का चित्र उत्तम उदाहरण है।

18 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जयपुर शहर के प्रवेश द्वारों को चित्रित कर सजाया गया। यहाँ के अलंकृत चित्रों को देखकर लगता है,चन्द्रमहल के पिछले द्वार पर खिड़की को चित्रांकित किया गया है, शिल्प का प्रभाव रंग द्वारा दर्शाया गया ,ऊपरी भित्ति पर प्राकृतिक रूप से बने लता कुंज में खरगोश बनाये गये हैं जो उसके ही एक भाग लगते हैं। शिल्प का प्रभाव रंग द्वारा दर्शाया गया है।

भारतीय चित्रकला में प्राचीनकाल से ही पशु-पक्षियों ने एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है। आदिम काल से ही मानव का इनसे निकटतम सम्बन्ध रहा है। वैज्ञानिकों ने पक्षियों की ही प्रेरणा से सिद्धान्त बनाये और इंजीनियरों के द्वारा वायुयान बनाये गये तब मनुष्य ने अंतरिक्ष में उड़ने की कला का प्रादुर्भाव किया।

आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी के सुनहरे सुन्दर मनभावन शब्दों में- "पक्षी हमारे विनोद का साधन था, पत्रवाहक था , रहस्यालाप का दूत था ,भविष्य के शुभाशुभ का दृष्टा था,वियोग का सहारा था,संयोग का योजक था,युद्ध का संदेशवाहक था और जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जहाँ वह मनुष्य का साथ न देता हो।"[6]

मानव जीवन में इनकी महत्ता भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू के हृदयस्पर्शी मन की जलतरंग को तरंगित करने वाले इन शब्दों से प्रकट होती है-" हमारा जीवन नितान्त शुष्क व रंगहीन हो जायेगा यदि हमें इन सुन्दर पशु-पक्षियों की छटा व शोभा देखने तथा क्रीड़ा करने को नहीं मिलेगी।"[7]

मुगलशैली पर राजपूत,तुर्की,फारसी,यूरोपीय शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है क्योंकि जहाँगीर ने दो मशहूर कला चित्रकारों मीर सैयद मीर अली तथा समद को दरबार कला गुरू का पद दिया। तुर्कीस्तान से फर्रुग बेग नाम के चित्ररंजक को 1584 ई. में हिन्दुस्तान में निमन्त्रित कर अपने यहाँ की चित्रशाला का अध्यक्ष बनाया। इनके चित्रों में पशु-पक्षी तुर्कीस्तान, काबुल आदि के चित्रांकित होते थे।

राजस्थानी चित्रकला में पशु-चित्रण की अपेक्षा खग-चित्रण अल्प हुआ है। इनका मुगल खग-चित्रण से भिन्न केवल इतना ही है कि मुगल शैली में खग-चित्रण प्रधान चित्र के रूप में चित्रित हुआ है जबकि राजस्थानी शैली के चित्रों में विशेष रूप से प्रकृति, पशु-खग आदि का चित्रण अधिकतर पृष्ठभूमि में हुआ है लेकिन सभी तरह के चित्रों में जितना खगों को चित्रित किया गया है उसका अपना विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी विहंगों जैसे तोता, मोर, मैना, कोयल, हंस, बगुला, चकोर,चातक,पपीहा,बाज,मुर्गा,खंजन,कुरजा आदि तथा चिड़ियों का प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है।

राजस्थान की चित्रशैलियों में पक्षियों के चित्रों का वर्गीकरण निम्नलिखित है-

1. कथा चित्रण में।

2. प्राकृतिक सौंदर्य में।

3. आलंकारिक चित्रण में।

4. प्रतीक एंव उद्दीप्पन के रूप में।

5. राग-रागिनियों के चित्रण में।

6. आखेट के चित्रों में।

1 कथा चित्रण में "ढोलामारू" पर आधारित एक चित्र में "मारू" "ढोला" को कुरजा पक्षी द्वारा अपना संदेश प्रेषित कर रही है,तो दूसरे चित्र में कुरजा अपने पंखों पर मारू का विकल हृदय की व्यथा अंकित करवाकर उड़ी जा रही है। "गीतगोविन्द" पर आधारति एक चित्र में बत्तख और सारस के जोड़े मिलन का प्रतीक है।

2 प्राकृतिक सौंदर्य में "बाराहमासा और ऋतु चित्रण" के चित्र आते हैं। मेवाड़ की उदयपुर शैली में रसिकप्रिया से सम्बन्धित चित्रांकन हुआ है , इनमें प्राकृतिक परिवेश का अंकन मनोहारी किया गया है। मेवाड़ शैली में प्रकृति चित्रण संतुलित हुआ है यह इस शैली की प्रमुख विशेषता है। (18वीं शती) में मारवाड़ की बीकानेर शैली में कुंज,सारस और मरूस्थल का चित्रण अधिक मिलता है। नारियल के तरूवर के अंकन उछलते फव्वारे हरे रंग का प्रयोग दर्शनीय है। चंद्रमहल के चित्रों में 18वीं शती के बाद झालरदार बादलों का अंकन किया गया है। बालू के टीले का चित्रण चीनी और ईरानी कला का प्रभाव लिये हुये मेघों, पर्वतों, पुष्प, पंखड़ियों,पत्तियों आदि का आलेखन उल्लेखनीय है। हाड़ौती की बूंदी शैली में प्रकृति के सुरम्य सतरंगा चित्रण प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण है- रंग-बिरंगे बादलों से युक्त नीलाम्बर,मोर,तोता,बगुला आदि पंछी उपवनों में अनेक प्रकार के पुष्प, फलों से लदे पेड़ लताओं, कमलपुष्प से ढके हुये सरोवर,कल्लोल करते हुये हंस, बकुल आदि दृष्टिगोचर होते हैं।

3 अंलकारिक चित्रण में चित्रों के हाशिये की सज्जा को देखें तो जयपुर के कुछ अच्छे चित्रों के हाशियों में पक्षियों का चित्रण देखने को मिलता है दूसरी ओर चित्र की आंतरिक सज्जा के रूप में जो प्रकृति चित्रण देखने को मिलता है। उसमें स्वच्छंद आकाश में अठखेलियाँ करते, पेड़ों की टहनियों पर कलरव करते पंछी, कूहुकते मोर फलों को कूतरते हुये तोते, पंखों की ओट में मुख को छिपाये हुये, नृत्य करते हुये मोर प्रधान रूप से चित्ररंजित हुये हैं विशेषत: हाड़ौती-बूंदी शैली और मारवाड़-किशनगढ़ शैली में दृष्टिगोचर होते हैं।

4 प्रतीक एंव उदीप्पन के रूप में जहाँ राजस्थानी चित्रों में राधा-कृष्ण, नायक-नायिका, राजा-रानी दृष्टिगत होते हैं ऐसे चित्रों में सारस,मोर व अन्य पक्षियों के जोड़े क्रीड़ा करते हुये प्रतीक रूप में चित्रित किये गये हैं।

5 राग-रागिनियों के चित्रण में राग-रागिनियों के चित्र दृष्टिगोचर होते हैं जयपुर, जोधपुर, अलवर आदि शैली के राग-रागिनियों के चित्र '36' चित्रों के सैट' में अत्यधिक संख्या में दृष्टिगत होते हैं इन चित्रों में राग-रागिनियों के रूप, भाव, रस और समय स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। हमें इन चित्रों में पक्षियों के चित्र अभिप्राय के रूप दिखाई देते हैं- जैसे राग मेघ में आकाश में बगुलों की पंक्ति। मोरों का राग रागिनियों से चाँद-चकोर का सा सम्बन्ध है। राग-रागिनियों एंव

नायिका-नायिका भेद विश्व भर में राजस्थानी शैली की विशेषता है वैष्णव धर्म से प्रभावित है तथा वैष्णव धर्म कृष्ण भक्ति पर आधारित है। कृष्ण का परम प्रिय पक्षी मोर ही था तथा मोर का भरपूर रूपाँकन हुआ है।[8]

रसिकप्रिया में चित्रित चित्र है जिसमें मोरों का रूपाँकन किया गया है इस चित्र में मोर और भद्र गोपियों को उनके साथ हर्षोउल्लास के साथ मग्न मुद्रा में चित्ररंजित किया गया है इस चित्र में दो मोर नृत्य कर रहे हैं और तीन मोर नृत्य तो नहीं कर रहे है किन्तु उनकी मुख-मुद्रा को देखकर प्रतीत हो रहा है कि उनका ह्रदय उल्लास से भरा हुआ है। मोर अपने पंखों को फैलाये असीम सौंदर्य का प्रदर्शन कर रहे हैं।

मोर का ऐतिहासिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक एंव राष्ट्रीय दृष्टि से भी बहुत महत्व है वह भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित है। इतिहास में ना केवल भारत वरन विदेशों में भी मानव और इस पक्षी के बीच बहुत पास का सम्बन्ध देखने को मिलता है। भारतीय पक्षियों में किसी अन्य पक्षी ने इतनी ख्याति नहीं पायी है। अपनी कलात्मक छटा के कारण लगभग दो हजार से अधिक वर्षों से मोर को पालतू बनाया जाता रहा है।[9]

राजस्थान में मोरों के चित्रण में बड़े मोरों के पंख, पैर, ग्रीवा तथा पेट सभी को लगभग समान पतली रेखाओं में दर्शाया गया है। आँखों को समकालीन अन्य चित्रों की भाँति गोल बिन्दु से दिखाया गया है। दोनों मोरों के पेट में कांटे युक्त पत्ती जैसे रूपाकार बने हैं क्योंकि मोर के ये रूप अन्य रूपाकारों से सर्वथा भिन्न न होकर उन्हीं का अनुकरण करते हुये उन्हीं की विशिष्ट शैली में एक ही दिशा में मुख किये रूपायित है। अत: मृतक के परलोक यात्रा सम्बन्धी जिन विवरणात्मक रूपाकारों के साथ इन मोरों का चित्रण किया गया है। उसमें हम मोर के सम्पूर्ण रूप को मात्र अलंकरण कहकर प्रतीकात्मक रूप में ही चित्रित किया गया ही मानेंगे।

सांची स्तूप मोरों की भांति चित्रित युगल मोरों के इन मोहक छोटे से रूपों में भी सशक्त तूलिका की सिद्धहस्तता तथा पूँछ व पंख में की गई बारीकी अवलोकनीय है। यद्यपि मोर की ग्रीवा यथार्थ में बहुत छोटी है तथापि कलंगी व पंख से इसके रूप पर कोई संदेह शेष नहीं रह जाता है। पेड़ के पत्तों व तन के आकार तथा मोर के आकार को देख कर लगता है कि आपसी अनुपात को महत्व न देकर कलाकार ने सौन्दर्य सृजन को प्राथमिकता दी है।

ढूँढार क्षेत्र से जयपुर, अलवर, उनियारा क्षेत्र के लघु चित्रों में भी मोर का प्रचुरता से अंकन हुआ है। जयपुर व अलवर शैली राजस्थानी शैलियों में मुगली प्रभाव से सर्वाधिक प्रभावित होने के बावजूद मोरों के अंकन को दृष्टि से भारतीयता के अनुरूप राग-रागनियाँ,बारहमासा व देवी-देवताओं व नायक-नायिकाओं जैसे भाव-पूर्ण प्रसंगों से युक्त व समृद्ध है। जिनका मुगल कला में अभाव है।

जयपुर संग्रहालय में सुरक्षित जयपुर शैली के राग-रागनियों के सभी मयूर समान रूप से चित्रित किये गये हैं जयपुर शैली के मोर रूप अपनी कुछ अलग ही विशेषताएँ लिये हुये हैं। सभी चित्रों में आँख के चारों ओर की अंडाकार गोलाई का सफेद रंग, चोंच की सफेदी के साथ मिला हुआ है। सफेद ही रंग के पैर जिनमें पीछे के पंजों को नहीं बनाया है पंजे बड़े चित्रित है। माथे पर लयहीन कलंगी सीधी खोंसी हुई पतले तार की पंखी के समान है। सभी चित्रों में पेट को दो भागों में विभक्त कर रही है। उड़ने वाले पंखों पर शरीफे के समान रंग पोत दिया गया है। लंबी पूँछ में चन्द्राकार पंखों

को मात्र एक पंक्ति में समान आकार से चित्रित किया गया है। ग्रीवा व पेट तथा छाती नीली,पीठ के पंख बहुत हल्के भूरे लाल व पूँछ को बहुलता प्रधान हरे रंग पर सफेद व गहरे नीले चन्द्रकों से बनाया है। कुल मिलाकर जयपुर शैली के 18वीं शती के इन मयूरों की रंग योजना फीकी है तथा रूपाकारों में बारीकी व सफाई होते हुये भी क्रियात्मक दृष्टि से गतिशीलता व चंचलता का अभाव है। प्रमुखता के साथ चित्रित किये जाने के कारण जयपुर शैली में मोरों का बहुत महत्व है।

जिस प्रकार मोरों का सुन्दर चित्रण किया गया है उसी प्रकार अन्य पक्षियों का भी चित्रांकन सौंदर्यपूर्ण ढंग से किया गया है। कहीं पर पक्षी वृक्षों पर बैठे हुये, नारियों को पक्षियों को दाना खिलाते हुये चित्रित किया है। कुछ पक्षियों को देवी-देवताओं के रूप में भी चित्रित किया गया है उनमें हंस, गरूड़, मोर, कबूतर आदि अंकित है।

हंस जिसका पृथ्वी, नीर और अम्बर तीनों से स्पष्ट सम्बन्ध है, वैसे हंस ब्रह्मा व सरस्वती को मनोरंजक रूप में भी चित्रित किया गया है। सरस्वती ज्ञान, विवेक की प्रतीक हैं व हंस उनकी सवारी है। नारी की मंद चाल की तुलना हंस की चाल से की जाती है।

मोर, पपीहा, तोते, कबूतर, चिड़ियों आदि पक्षियों को सदृश प्रतिरूपित किया गया है, जो चित्रकार के भावों की अभिव्यक्ति है। पक्षियों में मोर का चित्र बनाकर चित्रकार वातावरण में गूंजते संगीत को व्यक्त करता है। पक्षियों का चित्रण अनेक प्राचीन ग्रन्थों में देखा जा सकता है, सात स्वरों के चित्र में दिव्यरूपों को भी पक्षियों पर सवारी रूप में बैठे हुये चित्रांकित किया है।

कोयल का पंचम स्वर तो लोक गीतों और काव्य में खूब वर्णित हुआ है तोतों तथा अन्य छोटे पक्षियों को भी वे भली भाँति चित्रित कर सके हैं। राजस्थान के चित्रकारो ने पक्षियों का चित्रण बड़ी कुशलता के साथ किया गया है। पक्षियों को इस शैली के लघु चित्रों में सम्मिलित रूप से ही सादृश्य किया है। किसी-किसी पृष्ठभूमि में पक्षी अकेले भी चित्रित हैं। यह बात सवाई प्रताप सिंह जी के समय में बने चित्रों में अधिक स्पष्ट है।

राजस्थान का कलात्मक विकास एक स्थान पर ठहरा नहीं है, वह सदैव गतिशील रहा है। मध्यकाल व विशेषकर संस्कृत व भक्ति साहित्य में पक्षियों के जो वर्णन मिलते हैं जो रोचक होने के साथ-साथ आपसी सम्बन्धों की गहराई का परिचयकर्ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ. वन्दना जोशी, नाथद्वारा चित्र शैली, प्रकाशन - राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, संस्करण - 2010,पृष्ठ - 36
2. डॉ. वन्दना जोशी, नाथद्वारा चित्र शैली, प्रकाशन - राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, संस्करण - 2010, पृष्ठ - 41
3. डॉ. वन्दना जोशी, नाथद्वारा चित्र शैली , प्रकाशन - राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, संस्करण - 2010, पृष्ठ - 84
4. दृष्टव्य
5. विभूति शर्मा, शोधग्रन्थ - जयपुर शैली के चित्रों में सौन्दर्य के अभिव्यंजक तत्व एक अध्ययन, 2016, पृष्ठ - 97

6. सिंह राजेश्वर प्रसाद नारायण , भारतीय साहित्य में पक्षी भारत के पक्षी, प्रकाशन सूचना और प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली, संस्करण - 1958, पृष्ठ - 30
7. यादव रामनारायण, राजस्थान के वन्यजीव, राजस्थान पत्रिका, 7 अक्टूबर, 1984
8. विजयवर्गीय रामगोपाल, राजस्थानी चित्रकला, संस्करण - 1953, पृष्ठ- 39
9. एम. कृष्णन इण्डियाज, नेशनल बर्ड, द टाइम्स ऑफ इंडिया एन्ड अल , संस्करण - 1964, पृष्ठ - 39